बीज बचाओ आन्दोलन

सेवा में,
मांननीय श्री नरेंद्र मोदीजी
प्रधान मंत्री, भारत
नई दिल्ली

2 गते चैत्र विक्रमी संवत 2072
तदनुसार 17 मार्च 2015

विषय- किसनों से मन की बात 22मार्च 2015- किसानों के मन की बात सुनिए।

मान्यवर मोदी जी,
सादर वन्दे। किसानों की सेवा बांचना, इधर पहाड़ों में मौसम
का हाल-चाल बेहाल है। चैत्र के महीने भी कंपकंपी छूट रही है। बद्रीनाथ, केदारनाथ,
गंगोत्री व यमनोत्री सहित अन्य पहाड़ियों पर बेमौसम बर्फ पड़ रही है। खेती किसानी का
हाल बुरा है। कहीं रबी की फसल बुआई इसलिए नहीं हो पायी थी कि मानसून
के बाद सूखा पड़ गया। अब जमकर बारिश व वर्फबारी हो रही है। 15 अगस्त को
कई स्थानों स्वतंत्रता दिवस इसलिए नही मना पाये क्योंकि वहां बादल फटने से भारी तबाही
मची, भूस्खलन हुए, बाढ़ आयी और जनधन की हानि हुयी। हम और हमारी सरकारें
कितनी जल्दी भूल गये कि 2012 को उत्तराखण्ड के अनेक हिस्सों में सितम्बर में भारी
तबाही मची थी, और 2013 में 15, 16 व 17 जून को अचानक बद्रीनाथ
केदारनाथ व सारे उच्च हिमालयी क्षेत्र में अचानक बेमौसम ऐसी भयंकर बारिश
हुयी, बादल फटे कि अकेले केदारनाथ में 10 हजार से अधिक लोगों की जान
के जिन्दा दफन होने की घटना ने पूरे देश को हिला कर रख दिया था,
इस तबाही को बढ़ाने में जलविद्युत परियोजनाओं ने आग में घी का काम किया था।
विगत माह में हिमालयी हिस्से के जम्मू-कश्मीर में हुयी
तबाही को भी इतिहास में दर्ज हो गयी। पिछले दो-ढाई दशक से जलवायु
और मौसम लगातार उल्टा पुल्टा हो रहा है। अब कुछ दिन बाद कहां बड़ी तबाही
आती है मन धुकधुक कर रहा है, डर है सावन सूखा न चला जाय,
कुछ समझ में नही आता निरभागी मौसम किसानों के पीछे हाथ धोकर क्यों
पीछे पड़ा है। किसानों पर मार लगातार पड़ रही है, इधर राजधानी दिल्ली और
अमेरिका-जापान व अन्य विकसित मुल्कों का विकास आशा है ठीक ठाक चल
रहा होगा। आप इस विकास को गति देते रहे, यहां कि भगवान ही चिंता...
मान्यवर एक छोटा किसान और पिछले 25-30 सालों से खेती
किसानी की समस्या के संदर्भ में बीज बचाओ आंदोलन कार्यकर्ता के नाते जब
हमने सुना कि हमारे देश के प्रधानमंत्री जी पहली बार बातचित करने वाले हैं,
और कुछ सुझाव भी मांग रहे हैं, तो भारी प्रसन्नता हुयी और इस पत्र को
लिखने की हिम्मत जुटा पाये, मन की बात शब्द हमारे मन को छू गयी
हमारे मन में, पुराने दिन याद आने लगे, लेकिन आज खेती किसानी
की हालत देख कर, मन उदासी से भर आया,

Page → 2

हेंवलघाटी, डाकखाना नागणी २४९१७५, टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड
Henwalghati, PO Nagni 249175, Tehri Garhwal, Uttarakhand, India
Vijayjardhari@gmail.com -
Cont- 09411777758

याद आ रही है 25-30 साल पूर्व गुजरे दिनों की जब हमारे देश में छः ऋतुऐं वसन्त, ग्रीष्म, वर्षात, शिशिर, हेमंत व शरद निश्चित क्रम में आती-जाती थी, किसान निर्धारित वक्त बीज बोते थे, निराई-गुड़ाई करते थे और यथा समय कटाई होती थी, जलवायु मौसम कहीं रोड़ा नही था, पशुधन गाय, बछड़ों, बैलों व भैसों से घर आंगन भरे रहते थे, हमारे नाल, खाल, तालाब/बावड़ियां पानी से लबालब भरी रहती थी, वहीं पशुधन विराजमान रहता था। चारों ओर गाय-बैलों की घंटियों का मधुर संगीत गूंजता था, गांव के अपने जंगल थे जहां से पशुओं के लिए पर्याप्त चारा और खेती के औजार भी मिलते थे, मुंशी प्रेमचंद के हीरा-मोती और होरी आदि...। खेत, खलिहान और घर के कुठार विविधता युक्त अनाज, दलहन तिलहन और साग भाजी से भरे रहते थे, जिसे खाकर लोग, स्वस्थ-प्रसन्नचित रहते थे, बीमारियां पास नही फटकती थी, तभी राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने ग्रामस्वराज्य को आगे बढ़ाने की बात कही थी,

लेकिन आज देश के गांवों से बुरी खबरें आ रही हैं, न घर के बीज रहे न खाद न बैल न विविधता युक्त खाद्यान्न, मैदानी गांवों में बैलों की घंटियों की जगह ट्रैक्टरों की भोंडी गड़गड़ाहट सुनाई देती है बैलों के गोबर और जैविक खाद की जगह रासायनिक खाद और तेल के ईंधन से आंखों में पानी आता है। मौसम के हाल का वर्णन तो ऊपर आ गया है। किसानें पर विपत्ति का पहाड़ टूट रहा है, आपने खूब सुना होगा अब तक तीन लाख से अधिक किसान आत्महत्या कर चुके हैं। राजनीतिज्ञों को चुनाव के वक्त हमारी याद आती है, बस...

मान्यवर मोदी जी आप कहते हैं देश का कम विकास हुआ, जिसे पूरा करने के लिए आप दिन रात मेहनत में लगे हैं, किंतु इतनी सच्चाई जरूर है देश में छोटा कर्मचारी पदोन्नत होकर अधिकारी बना, छोटा व्यापारी बड़ा बना छोटा उद्योगपति बड़ा उद्योगपति बना, छोटे शहर बड़े हुए अब तो हाईटैक होने जा रहे हैं लेकिन भारतीय गांव क्यों उजड़ रहे हैं? किसान क्यों आत्महत्या कर रहे हैं? और नई पीढ़ी खेती छोड़कर क्यों शहरों की तरफ मजदूर बनने के लिए पलायन कर रही है? किसानों के विकास के लिए देश में हरितक्रांति आयी थी, पहले पहल मैक्सीको से गेंहू का चमत्कारी बीज आया, उसके साथ रासायनिक खादें आयी, बम्पर पैदावार हुयी, किसान खुश हुए देश का अनाज भंडार बढ़ा। लेकिन कुछ समय बाद फसलों में बीमारियां फैलने लगी, वैज्ञानिक कीटनाशक जहर को दवा कहकर प्रस्तुत करने

→3

लगे, कीटनाशक जहरों का खूब छिड़काव होने लगा, आरम्भ में प्रदर्शन के नाम पर बीज, खाद कीटनाशक मुफ्त मिले किंतु जब किसान के पास घर का बीज न रहा तो बीज खाद खरीदना किसान की मजबूरी बना, नये बीजों के साथ नये खरपतवार आये तो पीछे से खरपतवारनाशी भी आ गया, बैलों की जगह ट्रैक्टर आये जो घास की जगह तेल पीने लगे और गोबर की जगह तेल पीकर प्रदूषण फैलाने लगे, किसानों ने परंपरानुसार नये बीजों को अगली फसल के लिए रखने का प्रयास किया किंतु ये बीज खराब होने लगे और पैदावार गिरने लगी, हरएक फसल में नये-नये बीज आये, किंतु किसानों के पीढ़ियों पुश्त घर के बीज और घर के संसाधन कब लुप्त हुए पता ही नहीं चला, घर की खेती पराई होती गयी, खेती में लागत बढ़ती गयी, अब लाभ भी कम होने लगा, आमदनी अठन्नी और खर्चा रूपया वाली कहावत चरितार्थ होने लगी, और एक दौर ऐसा आया कि किसानों की आत्महत्या की शुरुआत हुयी जो निरंतर आगे बढ़ती आ रही है, अब किसान कर्ज के जाल में फंसे हैं। ~~बैंक और साहूकार~~ गांठ में पैसा नही तो बैंकों और साहूकारों की शरण में न जाये तो फिर जायें कहां?

मान्यवर प्रधान मंत्री बनने के कुछ दिनों बाद आपने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के दिल्ली स्थित पूसा इंस्टियुट का दौरा किया, हमने सोचा आप वैज्ञानिकों की क्लास लेकर पूछेंगे हमारे मुल्क के लाखों गरीब किसान आत्महत्या क्यों कर रहे हैं? इसके लिए कौन जिम्मेदार है? दुख हुआ आपने भी वही नारा दिया "प्रयोगशाला से खेत तक" इसी नारे ने तो हमारा सत्यानाश किया, भारतीय कृ. अनुसंधान जरूर नाम है किंतु यहां तो अब तक ज्यादा अनुसंधान अमेरिकी और पाश्चात्य कृषि और वहां की बहुराष्ट्रीय कंपनियों का कारोबार बढ़ाने के लिए होता आया है,

मा० मोदी जी अगर आप भारतीय खेती की बात समझना चाहते है तो अमेरिका की खेती का मॉडल छोड़ना होगा वहां केवल डेढ़-दो फीसदी किसान हैं और हमारे यहां 70 प्रतिशत जनता की आजीविका का आधार खेती रहा है, गलत हरित क्रांति के अमेरिकी मॉडल से अब किसान मौत के द्वार और खेती छोड़ने से कम हो रहे हैं। अमेरिका की सभ्यता तीन चार सौ साल की मात्र है किंतु हमारी खेती पशुपालन की सभ्यता व संस्कृति हजारों सालों

→ 4

अनादिकाल पुरानी है। भगवान श्रीकृष्ण ने गोधन चुगा कर पशुधन का सम्मान बढ़ाया, और भगवान श्रीराम ने तो अयोध्या की राजसत्ता को तिलांजलि देकर जंगल की सत्ता की आधीनता स्वीकार कर जंगलों से विविधतामुल कंदमूल, फल-फूल, साग-सब्जियां व खाद्यान्न खाकर वहां के मूल निवासियों और अरण्य संस्कृति का सम्मान बढ़ाया, इसीलिए वे मर्यादापुरुषोत्तम कहलाये, और आपने भी तो श्रीराम. . . . । हमारे योजनाकारों ने पाश्चिमी औद्योगिक शहरी विकास चुना और खेती का अमेरिका माडल चुनकर गेंहू-चावल की उपज बढ़ाकर वाही-वाही जरूर लूटी किंतु बदले में विविधता मुल जैव विविधता गंवानी पड़ी।

विविधतामुल खानपान भी लापता हुआ, फलस्वरूप आज उपभोक्ता कुपोषण और खतरनाक बीमारियों से घिरे हैं। कितनी चालाक है वे बहुराष्ट्रीय कंपनियां पहले रासायनिक खाद, कीटनाशक व खरपतवारनाशी रासायनों से उत्पादित जहरीला खानपान खिला कर बीमारियां पैदा करती हैं फिर जीवन रक्षक दवाईयां लेकर स्वास्थ्य के हिफाजत की बात करती है। सरकारें विकास के नाम पर इनके कारोबार को मजबूती देती हैं।

भाग्य पर हम किसानों का दुर्भाग्य रहा कि हमने अपने पारंपरिक ज्ञान और जैव विविधता पर भरोसा न रखकर बाहरी लोगों के ज्ञान और तकनीकी पर भरोसा किया, लेकिन यह सच्चाई है कि खेती किसानी जीवन पद्धति और संस्कृति है। किसान वही है जो अपने और परिवार की भूख शांत करने के लिए विविधतामुल फसलें उगाता है, लेकिन साथ में वह अन्नदाता भी है, जो लोग खेती नहीं करते उनकी भूख शांत करने की जिम्मेदारी भी किसानों पर है। विविधता प्रकृति का स्वाभाविक गुण है। खेती हमेशा विविधतामुल रही है, ठीक उसी तरह जैसे जंगल कहीं एकल प्रजाति का नहीं होता, हमारी जीभ एक तरह के स्वाद से जल्दी ऊब जाती है, इसलिए हमारा मन विविध तरह की चीजें मांगता है, इसी तरह पोषण में शरीर को भी विविधता चाहिए। किंतु खेती में एकल प्रजाति, व्यापार और वाणिज्य खेती के लालच ने किसानों की जीवन पद्धति को उजाड़ दिया, कभी कभी हमें लगता है कि खेती के विकास के नाम पर जानबूझ कर खेती पर उद्योग घरानों ने कब्जा करने के लिए यह चाल चली है। इसी का परिणाम है किसानों आत्महत्यायें।

मिट्टी और खेती योग्य जमीन – मिट्टी सृष्टि का आधारभूत तत्व है। धरती को हम माँ जरूर कहते आये है किंतु मिट्टी को विकास योजनाओं में महत्वपूर्ण स्थान नहीं मिल पाया है। मिट्टी किसान का मूल धन कहलाती थी, किंतु आधुनिक उन्नत खेती ने रासायनिक खादों के अत्यधिक इस्तेमाल से उपजाऊ मिट्टी को नींबू की तरह निचोड़कर निरस बना दिया है। मिट्टी या धरती मां के साथ घातक रासायन, और जहरों का अंधाधुंध इस्तेमाल करना, नाजायज छेड़छाड़ या बलात्कार से कम नहीं है। यदि धरती माँ सीधे बोलने वाली होती तो जरूर कहती, अभागों ऐसा मत करो। मिट्टी की सेहत बिगाड़कर

5

से जहरीला खाद्यान्न पैदा हो रहा है, जिससे आम उपभोक्ताओं की सेहत बिगड़ कर खतरनाक बीमारियां पैदा होती हैं। जबकि पारंपरिक, जैविक। प्राकृतिक खेती को थोड़ा सा वैज्ञानिक पुट देकर सभी लोगों को स्वादिष्ट पौष्टिक भोजन दिया जा सकता है,

• वर्तमान में भारत सरकार द्वारा घोषित भूमि अधिग्रहण कानून ब्रिटिश शासन से चले आरहे कानून से भी खतरनाक है। आप बार-बार कह रहे है कि यह कानून किसानों की भलाई के लिए है, आप बतायें ऐसे कानून की मांग किसानों ने कब की है? यह जरूरी है कि जनहित की सड़कें, रेलवे लाइन, स्कूल व अस्पताल के लिए भूमि मिले, बताईए किसानोंने कब भूमि नही दी, किसानों ने भूमि दी है और देते रहेंगे। किंतु देसी, विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के बड़े-बड़े मालों हाई टेक सिटी (लवासा जैसी सिटी) एफ डीआई व एसइजेड के लिए गरीब किसानों की आजीविका से जुड़ी खेती योग्य उपजाऊ जमीन देना अन्याय ही नही महा अन्याय है, सरकार से जुड़े लोग तर्क देरहे है किसानों को अच्छा प्रतिकर मिलेगा, मान्यवर जमीन के बदले अच्छे धन की बात पर हमें पहाड़ की " नाक बेच कर नथ पहनने" वाली पुरानी कहावत चरितार्थ दिखाई देती, खेती की जमीन अचल सम्पत्ति है इसके बदले पैसा कितने दिन चलेगा? हमारी अगली पीढ़ी - - - - - - -

बीज -

बीज सृष्टि का एक महत्वपूर्ण तत्व है, बीज किसी वैज्ञानिक या उद्योगपति ने प्रयोगशाला में नही बनाया, हजारों वर्ष पूर्व किसानों के पुरखों ने जंगल से चुन-चुन कर बीजों का संकलन किया और पीढ़ी-दर पीढ़ी अपने वंश की तरह इन्हे आगे बढ़ाया, इन्ही बीजों पर शोध कर वैज्ञानिकों ने नये बीज बनाये, लेकिन वैज्ञानिक व बहुराष्ट्रीय कंपनियां "भस्मासुर" की तरह किसानों के साथ सलूककर रही हैं, एक जमाने में किसान पैसे से गरीब जरूर थे किंतु जैव विविधता के मामले में बहुत अमीर थे, हरएक इलाके की भौगोलिक परिस्थिति के अनुकूल अलग-अलग और विविधता थी, इसीलिए तो भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था, कहते हैं धान की लाखों प्रजातियां बाकायदा स्थानीय नाम से थी, इन्हे यदि एक-एक दाना घड़े में जमा करें तो घड़ा भर जाता था। गेहूं, जौ, दलहन तिलहन, ज्वार, बाजरा व मंडुआ व साग-सब्जियों की भी हजारों किस्में होती थी किंतु आज देसी बीज ढूंढे नही मिलते। आज सर्वत्र बहुराष्ट्रीय कंपनियों के बीज दिखाई देते हैं, इसका मतलब यह नही कि हमारे बीज उपज में कमजोर थे, कई पारंपरिक प्रजातियां जैविक खाद से आज भी कथित उन्नत बीजों के बराबर उपज देने में सक्षम हैं, क्या आप किसानों से मन की बात कर यह सलाह देंगे कि ऐसी खेती करें, जिसका किसान बीज न रख सके, यह कितना अन्याय है खेती किसान करे और

बीज बहुराष्ट्रीय कंपनियों का खरीदना पड़े, यह किसानों के साथ धोखा नहीं महाधोखा है।

- हरितक्रांति की सफलता/विफलता की पड़ताल स्वतंत्र आयोग द्वारा कराई जानी चाहिए, क्योंकि किसान सूख गये, कम्पनियां हरी हैं।

अब आपकी सरकार दूसरी हरितक्रांति के नाम पर जीएम बीजों को लाने के कानून बनाना चाहती है। जिस ब्राई बिल का विपक्ष में रहते हुए आपकी पार्टी विरोध करती थी, उसे पास कराने या बिना संसद की अनुमति के लाने के लिए आप उतावले हैं। अपने नागरिकों के स्वास्थ्य एवं पर्यावरण के प्रति संवेदनशील दुनिया के कई देश जीएम बीजों के प्रति सावधान रहते हुए उसकी अनुमति नहीं दे रहे हैं, किंतु भारत सरकार अमेरिकी कंपनियों के दबाव में जीएम बीज लानेवाली है। अब तक प्राप्त जानकारियों के अनुसार, जीएम तकनीक यहाँ के पारंपरिक बीजों एवं जैव संपदा का संदूषण के माध्यम भारी नुकसान पहुँचायेगी, उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव पड़ेगा, आप इस सन्दर्भ में क्या सोचते हैं?

- मोटे अनाज या पौष्टिक अनाज?

मोटे अनाज जिन्हें कहा जाता है देखने में वे गेहूं-चावल से ज्यादा बारीक हैं किंतु ग्रामीण जनता का मुख्य भोजन होने के कारण इन्हें मोटा-झोटा अनाज कहा जाता है। इन अनाजों में ज्वार, बाजरा, रागी (मंडुआ) सांवा (झंगोरा), कंगनी, चीना, कोदो एवं कुटकी आदि हैं, पौष्टिकता की दृष्टि से ये अनाज दुनिया के सबसे पौष्टिक हैं जो उच्चतम कैल्शियम, प्रोटीन, रेशा, आयरन व अनेक खनिज व विटामिन के भण्डार हैं, इसलिए किसान इन्हें पौष्टिक अनाज कहते हैं। पौष्टिक अनाज या मिलेट लोगों को अनेक बीमारियों से बचाते हैं, और अनेक बीमारियों की दवा भी हैं किंतु ये अनाज सरकारी योजनाओं में उपेक्षा के शिकार हैं। पूर्व सरकार ने "इंसिमप" योजना के अन्तर्गत इन्हें आगे बढ़ाने की योजना बनायी थी, किंतु बाद में बंद कर दी, इन पौष्टिक अनाजों के बारे में आप क्या करेंगे? इन अनाजों को भविष्य की खेती इसलिए कहते हैं कि इन्हें सिंचाई की जरूरत नहीं, सूखा, बाढ़ या अन्य खतरों को झेल जाते हैं, मिश्रित खेती में भी अच्छे होते हैं।

• जलवायु और मौसम परिवर्तन- किसानों पर अप्रत्यक्ष मार -

मान्यवर बेमौसम बारिश, सूखा, अतिवृष्टि व बाढ़ के प्रति पहले हमारे मन की धारणा थी कि यह प्राकृतिक प्रकोप है, कलियुग आ रहा है, किंतु वैज्ञानिक शोधों ने हमारी आँखें खोल दी हैं, इसका असली कारण दुनिया का अति विकास या उपभोक्तावादी सभ्यता है। बढ़ता प्रदूषण और ग्रीनहाउस जैसें इसके लिए ज्यादा जिम्मेदार हैं। जलवायु और मौसम परिवर्तन की मार शहरी व नौकरी पेशा लोगों को प्रभावित नहीं करती। उनकी तनख्वाह तो मिलती ही व्यापारियों का व्यापार भी चलता ही है। शहरी लोगों को गर्मी लगती है तो वे एसी, फ्रीज व कूलर का इस्तेमाल करते हैं, सर्दी लगेगी तो हीटिंग सिस्टम चलायेंगे, बीजली का सबसे ज्यादा उपयोग कर वे अपने अनुकूल बना लेते हैं।

प्रकृति या दैवी त्रासदि के नाम पर मौसम की अप्रत्यक्ष मार सीधी गरीब किसानों पर पड़ रही है, कभी सूखे से फसलें बरबाद होती हैं तो कभी अतिवृष्टि, बादल फटने से या बेमौसम बारिश से किसानों की मेहनत पर पानी फिर जाता है। अब कोई भी ऋतु या मौसम अपने निश्चित समय पर नहीं आती, मौसम का पूरा संतुलन ही बिगड़ गया है। ऐयाशी करने वाले बड़े देश या हमारे देश के बड़े शहर के लोग मौसम बिगाड़े और उसके दुष्परिणाम गरीब किसान भुगते इससे बड़ा अन्याय क्या हो सकता है। हम किस न्यायालय में जांय?

• इसलिए जरूरी है कि ऐसे विनाशकारी विकास और उपभोक्तावादी अपसंस्कृति को रोका जाय, जिससे जलवायु और मौसम प्रभावित हो रहा है। दुनिया के सभी देश संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा निर्धारित मानकों का पालन करें।

• लघु एवं सीमांत किसानों को रबी एवं खरीफ फसल की कटाई के मौके पर हर छमाही में जमीन की उपज अनुसार नुकसान का प्रतिकर मिले।

• जलवायु परिवर्तन के खतरे कम करने वाली मिलेट व मिश्रित खेती करने वाले किसानों को अतिरिक्त प्रतिकर मिले।

• उत्तराखण्ड के किसानों को मिले ग्रीन बोनस -

केंद्र सरकार ने पिछली बार उत्तराखण्ड के लिए ग्रीन बोनस की इसलिए शुरुआत की क्योंकि यहां 65 फिसदी जंगल हैं, लेकिन ये जंगल सरकारी प्रयास से नहीं अपितु, यहां के

किसानों के पुरुषार्थ से हैं, यहां के किसानों ने 1970 के दशक में चिपको आंदोलन चला कर विश्व प्रसिद्ध नारा दिया था -

क्या हैं जंगल के उपकार - मिट्टी, पानी और बयार
मिट्टी, पानी और बयार - जिन्दा रहने के आधार

लोगों ने सरकारी दमन को झेलते हुए जंगलों को कटने से बचाया, आज भी हजारों गाँवों के लोगो ने अपने संसाधनों से अपने आसपास के आरक्षित या वन पंचायत के सामुदायिक मिश्रित जंगल बचाकर रखे हैं, इसलिए ग्रीन बोनस पर राज्य सरकार के बजाय इन ग्राम समुदायों का अधिकार है जो सीधे तौर पर जंगल बचा रहे हैं,

मान्यवर अच्छे जंगलों की हरियाली के बावजूद भी आज हिमालयी क्षेत्रों में घटते ग्लेशियर और बार-बार बादलों के फटने से होने वाली तबाही और वर्षा का कम पड़ना चिंता का विषय है, कुछ विनाशकारी विकास तो आपको भी रोकना पड़ेगा, समझना पड़ेगा।

- जंगली जानवरों की किसानों पर मार -

मौसम की मार से यदि थोड़े बहुत फसलें बच गयी तो दिन को बन्दरों की टोलियां एवं रात को सुअर व नील गायों के झुण्ड खेतों में आकर फसलों को तहसनहस कर डालते हैं, हम उन्हे मार नही सकते क्योंकि वाइल्ड लाइफ एक्ट है, और वे भी पर्यावरण का हिस्सा हैं। लेकिन उनकी हिफाजत के लिए बना वन विभाग उनके भोजन का प्रबंध नही कर पाता, लेकिन पिछले कुछ सालों से जंगली जानवरों की संख्या में भी भारी बढ़ोतरी हुयी है। सरकारें उनकी संख्या कम करने या उनके लिए भोजन का प्रबंध जंगल में करने में नाकामयाब रही हैं, जंगली जानवरों की समस्या बहुत बड़ा मुद्दा है, इसका समाधान न होने से किसान खेती से बिमुख होकर खेती छोड़ रहे हैं,

- कैसे रुकेंगी किसानों की आत्महत्यायें -

किसानों को अन्नदाता कहा जाता है, जिसदेश में किसान आत्महत्या कर रहे हों, उन किसानों के मन की बात जानना तो बड़ा कठिन है किंतु उन परिस्थितियों को समझा जा सकता है, आत्महत्या वे किसान ही कर रहे हैं जिन्होने विविधतापूर्ण खेती छोड़ कर एकल व्यापारिक खेती अपनायी, और जो खेती की बढी लागत के कारण कर्ज के जाल में फंसे, कर्ज और ब्याज का बोझ बढ़ता गया.. और बढ़ता गया,...

पूर्व प्रधान मंत्री डा० मनमोहन सिंह ने ~~सोचा~~ इसके समाधान के लिए किसानों की कर्ज माफी का 71 हजार करोड़ रु. का बड़ा पैकेज दिया, फिर भी किसानों की आत्महत्यायें रुकी नहीं... रुकती भी कैसे? कर्जमाफी में जो धन आया वह बैंक, साहूकार, खाद-बीज, कीटनाशक व तेल-मशीनरियों के कारोबारियों जेब में गया, कुछ धन भ्रष्ट बैंककर्मियों और नकली किसानों ने हड़प लिया, किसान को अगली फसल तो उगानी ही थी, गाँठ में पैसा तो आया ही नहीं था, लिहाजा बीज, रासायनिक खाद व कीटनाशक आदि के लिए फिर नया कर्ज और आसानी से मिल गया और फिर कर्ज का चक्रवृद्धि ब्याज... और फिर वसूली और फिर आत्महत्या में बढ़ोतरी.

किसानों की आत्महत्या ~~के कारण~~ पर न सरकार चिन्तित हुयी न विपक्ष आपकी आकाशवाणी ~~और~~ भी किसानों के लिए बकवासवाणी रही और समाचार चैनल भी छोटा सा समाचार मान कर आज तक उपेक्षा करते रहे शायद इसलिए कि किसानों को बीज, खाद, कीटनाशक व आधुनिक उपकरण बेचने वाली देसी, विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियां और सरकार की गलत कृषि नीति खलनायक न बनें, वैसे भी ये कंपनियां कृषि विकास के नाम पर विज्ञापन के मार्फत मोटा धन प्रचार प्रसार के लिए देती हैं, किसान उन्हें धेला नहीं देता,

किसानों की आत्म-हत्या के मनोविज्ञान को समझना थोड़ा मुश्किल हो सकता है किंतु एक सीधा और सच्चा कारण यह है कि आत्महत्या वे किसान कर रहे हैं जिनकी खेती किसानी की जीवन पद्धति व संस्कृति आधुनिक कृषि विकास ने छीन ली है, जो अपने और अपने परिवार के लिए विविधता युक्त खेती के बजाय लागत आधारित ~~व्यापार~~ एकल व्यापारिक खेती कर कर्ज के जाल में फँस गये हैं।

आत्महत्यायें रोकने के लिए जरूरी है कि पहले किसान की जीवन पद्धति और संस्कृति को लौटाया जाय, किसान अपने और परिवार के भरण-पोषण के लिए विविधता युक्त खाद्यान्न, दलहन, तिलहन साग-भाजी पैदा करे। आज के युग में पैसा भी जरूरी है इसलिए विविधता युक्त खेती की पैदावार भी बेचें और ~~खे~~ खेतों के एक हिस्से में व्यापारिक फसलें भी उगायें,

आज भी देश के अनेक राज्यों के उन हिस्सों को देखें जहां किसान विविधता युक्त खेती करते हैं, वहां के किसानों का ~~स्वास्थ्य~~ किसान स्वस्थ भी है। पंजाब की तरह वहां कैंसर के रोगी नहीं मिलेंगे। उन हिस्सों में किसान आत्महत्या नहीं करते हैं।

→10

उत्तराखण्ड में मिश्रित खेती की "बारहनाजा" पद्धति समृद्ध खेती का अच्छा उदाहरण है। मंडुआ के साथ, अनेक तरह के दलहन, तिलहन एवं साग-भाजी उगा कर वे अपने को और धरती मां को स्वस्थ रखते हैं। यही कारण है कि उत्तराखण्ड पर किसानों की आत्महत्या का दाग नहीं लगा।

पशु धन -

एक जमाने में हमारे देश में दूध-घी की नदियां बहती थी, यह कहना थोड़ा अतिसयोक्ति लगता है। किंतु यह सच्चाई है कि हर एक किसान के दैनिक भोजन में दूध दही जरूर होता था, माफ करना हमारे यहां चाय का प्रचलन सन 1960 के दशक के बाद आम हुआ, पहले मेहमानों स्वागत दही मट्ठा से होता था, लेकिन दही मट्ठा का वह स्वाद और घी की वह खुशबू आज भी दिमाग में घूमती है। जिस तरह खाने का स्वाद व पौष्टिकता हाईब्रिड बीजों व रासायनिक खादों ने छीनी उसी तरह दूध-घी का स्वाद हमारी गायों की देसी नस्लों के खत्म होने से गया। कहां गयी हमारी सिन्धी, गिर, थारपारकर, साहीवाल व पहाड़ की काली गाय आदि नस्लें? कहाँ गये किसान के बैल? जब सरकारी योजनाओं में पहाड़ों में ट्रैक्टर का काम चलाने के लिए पावर टीलर सब्सिडी में दिया जा रहा किंतु बैलों पर सब्सिडी नहीं, भैंस और गायों पर अनुदान नहीं।

देसी नस्लों के बजाय जर्सी-फ्रिजियन और न जाने कौन-कौन सी विदेशी नस्लें लायी जा रही है। पशुओं के नैसर्गिक गर्भाधान के बजाय विदेशों से वीर्य का आयात होता है। हमारे पालतू पशुओं की देसी नस्लें पारंपरिक बीज की तरह लुप्त हो रही है। कौन बचायेगा इन नस्लों को?

मान्यवर मोदी साहब माफ करना चिट्ठी थोड़ी लम्बी हो गयी है, पुरानी यादें मन में आयी सो लिख दी, नया जो कुछ हो रहा है उसे भोगते हुए अपने अनुभव लिख दिये। किंतु मान्यवर एक बात याद रखना गाँठ मारे या नहीं पर इतना समझना कि भारतीय खेती किसानी का पारंपरिक ज्ञान और पारंपरिक जैव संपदा आड़े वक्त देश के काम जरूर आयेगी। हम आशावान हैं टिकाऊ खेती, पौष्टिकतायुक्त भोजन, शुद्ध हवा-पानी के प्रति किंतु चिन्तित है उस विनाशकारी शहरी विकास और शोषणकारी सभ्यता से जिसने "काले वर्षतु प्रजन्य, पृथ्वी शस्य श्यामला" की संस्कृति को खतरे में डाल दिया। आशा है आप किसानों की भावनाओं को समझेंगे। सादर, शुभकामनाओं सहित

भवनिष्ठ
(हस्ताक्षर)
(विजय जड़धारी)
उत्तराखण्ड व देश के किसानों की ओर से